पैग़ाम-ए-सुलह

(मैत्री संदेश)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

ABOUT THE BOOK

In a world plagued with intolerance for cultural, racial and religious differences, *A Message of Peace* serves as a panacea to the ills of the society. Prophetic in foresight and universal in scope, this book lays out a path to the peaceful existence of all humans based on the central theme of worshipping the One God. It is not surprising therefore that *A Message of Peace* forms the last work of a man who was destined to lay the foundation for the establishment of peace in this day and age and whose advent was prophesied in all major religions of the worldthe Promised Messiah and Reformer of the Latter Days.

My countrymen! writes the Promised Messiah,A religion which does not inculcate universal compassion is no religion at all. Similarly a human being without the faculty of compassion is no human at all.

पैग़ाम-ए-सुलह

(मैत्री संदेश)

लेखक
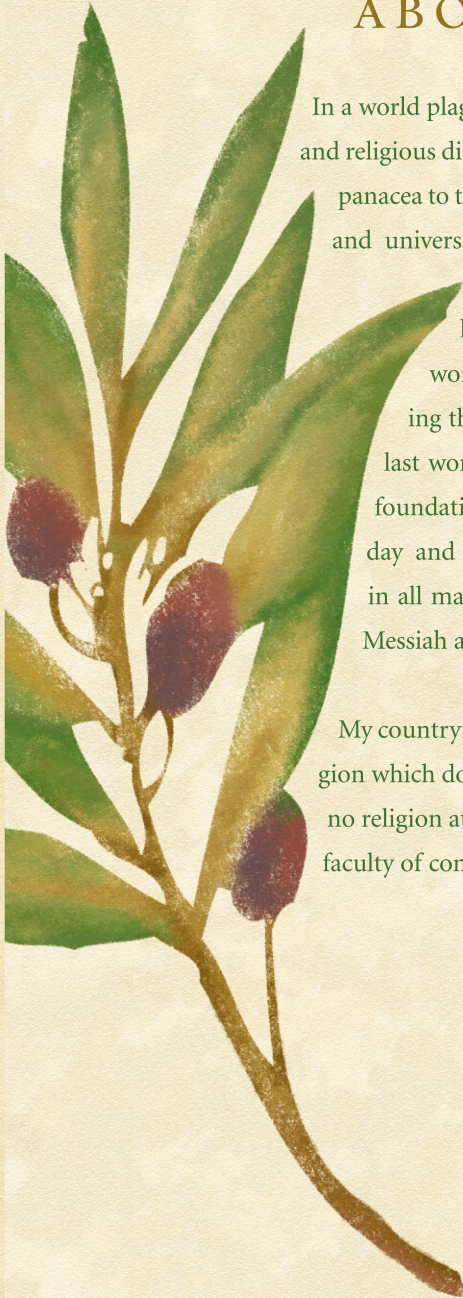
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: पैग़ाम-ए-सुलह
Name of book	: Paigham-e-Sulh
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Masih Mouood Alaihissalam
अनुवादक	: डॉ अन्सार अहमद, पी एच डी, आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr. Ansar Ahmad, Ph.D., Hons in Arabic
पूर्व संस्करण	: अप्रैल 2002 ई.
Previous Ed.	: April 2002
वर्तमान संस्करण	: नवम्बर 2017 ई.
Present Edition	:November 2017
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab) INDIA
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर, पंजाब
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab) INDIA

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रस्तावना

प्रिय सज्जनो! इस समय विश्व के हालात क्या रूप ले रहे हैं यह किसी से छुपा नहीं हर व्यक्ति धर्म के आधार पर दूसरे को अपना शत्रु ख्याल कर रहा है यही स्थिति आज से सौ वर्ष पूर्व भी थी। और विशेष रूप से भारत वर्ष में मुसलमानों और हिन्दू भाइयों में धर्म के नाम पर आपसी नफ़रत बढ़ती चली जा रही थी, आगे चल कर इसके जो ख़तरनाक परिणाम निकलने वाले थे उन को देखते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने पैग़ाम-ए-सुलह के नाम से एक लेक्चर 1908 ई. में अपने निधन से केवल दो दिन पूर्व लिखा था और जो आप के देहांत के पश्चात् 21 जून 1908 ई. को लाहौर में जनाब राय बहादुर परतौल चन्द्र चैटरजी की अध्यक्षता में एक बड़े जलसा में पढ़ कर सुनाया गया था। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस के विभिन्न भाषाओं में भी अनुवाद किए गए हैं यह पुस्तक दोनों क़ौमों के बीच बढ़ रही दरार को दूर करने का काम करेगी। श्री ब्रह्मदत्त "फ्रण्टियरमेल" समाचार पत्र देहरादून 12 दिसम्बर सन 1948 ई. में इस पुस्तक में लिखत सन्देश का वर्णन करते हुए लिखते हैं "अहमदिया सम्प्रदाय मुसलमानों में एक उन्नतिशील सम्प्रदाय है। समस्त धर्मों के साथ सद्-व्यवहार करना इसके मौलिक सिद्धान्तों और शिक्षाओं में सम्मिलित है। समस्त धार्मिक नेताओं का आदर व प्रतिष्ठा करते हुए अहमदियों ने उनकी शिक्षाओं को अपने धार्मिक ग्रन्थों में सम्मिलित किया है।

चालीस वर्ष पूर्व अर्थात् उस समय जबकि अभी महात्मा गांधी राजनीति के आकाश पर प्रकट नहीं हुए थे, मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने सन 1891 ई. मसीह मौऊद होने की घोषणा करके अपने परामर्श "मैत्री सन्देश"

पुस्तकों में प्रस्तुत किए, जिनका अनुसरण करने से देश की विभिन्न जातियों में संगठन, एकता, प्रेम और सौहार्द की भावना उत्पन्न होती है। आपकी यह प्रबल इच्छा थी कि जनता में सद्भाव, सदाचार, प्रेम और भ्रातृ-भाव उत्पन्न हो। निःसन्देह आपका व्यक्तित्व प्रशंसनीय एवं आदरणीय है क्योंकि आपकी दृष्टि ने भविष्य के प्रगाढ़ पटल में देखा और वास्तविक मार्ग की ओर पथप्रदर्शन किया। यदि जनता अपने स्वार्थ और अनुचित नेतृत्व के कारण उस सीधे मार्ग को न देश सकी तो यह उसकी भूल थी, घृणा एवं वैमनस्य का जो उसने बीजारोपण किया था उसकी फसल काटने की वह अवश्यमेव अधिकारिणी है।"

प्रिय पाठको! इस युग में पहले से कहीं बढ़कर आपसी घृणा को दूर करके प्रेम और शान्ति उत्पन्न करने की आवश्यकता है। इन्हीं विचारों के साथ जमाअत अहमदिया क़ादियान का प्रकाशक विभाग इस पुस्तक को प्रकाशित कर रहा है। इस पुस्तक क

नाज़िर नश्र व इशाअत
क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हे मेरे सर्वशक्तिमान ख़ुदा, हे मेरे प्यारे पथ-प्रदर्शक! तू हमें वह मार्ग दिखा जिस पर चलकर तुझे पाते हैं सत्यनिष्ठ और निश्छल लोग तथा हमें उन मार्गों से बचा, जिनका उद्‌देश्य केवल कामवासनाएँ हैं या द्वेष या वैर या दुनिया का लोभ एवं लालसा। तत्पश्चात् हे श्रोताओ! हम सब क्या मुसलमान और क्या हिन्दू सैकड़ों मतभेदों के बावजूद उस ख़ुदा पर ईमान लाने में साझे हैं जो संसार का स्रष्टा एवं स्वामी है और इसी प्रकार हम सब मनुष्य के नाम में भागीदारी रखते हैं। अर्थात् हम सब मनुष्य कहलाते हैं तथा इसी प्रकार एक ही देश के नागरिक होने के कारण आपस में पड़ोसी हैं। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि हार्दिक शुद्धता तथा नेक नीयत के साथ परस्पर मित्र बन जाएँ और धार्मिक एवं सांसारिक संकटों में परस्पर हमदर्दी करें और ऐसी हमदर्दी करें कि जैसे एक दूसरे के अंग बन जाएँ।

हे मेरे देशवासियो! वह धर्म, धर्म नहीं है जिसमें सार्वजनिक हमदर्दी की शिक्षा न हो और न वह इन्सान इन्सान है जिसमें हमदर्दी की भावना न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी क़ौम से भेदभाव नहीं किया। उदाहरणतया जो-जो मानवीय शक्तियाँ एवं ताकतें आर्यवर्त की प्राचीन क़ौमों को दी गई हैं वही समस्त शक्तियाँ अरबों, फ़ारसियों, शामियों, चीनियों, जापानियों, यूरोप तथा अमरीका की क़ौमों को भी दी गई हैं। सब के लिए ख़ुदा की पृथ्वी फ़र्श का काम देती है और सब के लिए ख़ुदा का सूर्य एवं चन्द्रमा तथा कई अन्य सितारे प्रकाशमान दीपक का काम दे रहे हैं। तथा अन्य सेवाएँ भी कर रहे हैं। उसके द्वारा उत्पन्न तत्त्व अर्थात् वायु, जल,

अग्नि और मिट्टी और इसी प्रकार उसकी समस्त पैदा की हुई वस्तुएँ अनाज, फल और औषधि इत्यादि से समस्त क़ौमें लाभ प्राप्त कर रही हैं। अत: ये ख़ुदाई व्यवहार हमें सीख देते हैं कि हम भी अपनी मानवजाति से सहानुभूति और व्यवहार के साथ और तंग दिल और संकीर्ण विचार न बनें।

मित्रो! निश्चित समझो कि यदि हम दोनों क़ौमों में से कोई क़ौम ख़ुदा के आचरण का सम्मान नहीं करेगी और उसके पवित्र आचरणों के विपरीत अपना आचरण बनाएगी तो वह क़ौम शीघ्र तबाह हो जाएगी और न केवल स्वयं बल्कि अपनी सन्तान को भी तबाही (विनाश) में डालेगी। जब से दुनिया पैदा हुई है समस्त देशों के सत्यनिष्ट यह गवाही देते आए हैं कि ख़ुदा के आचरण का अनुयायी होना इंसानी ज़िन्दगी के लिए अमृत है तथा मनुष्यों का शारीरिक और आध्यात्मिक (रूहानी) जीवन इसी बात से सम्बद्ध है कि वह ख़ुदा के समस्त पवित्र आचरणों का अनुसरण करे जो सुरक्षा का स्रोत हैं।

ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन को पहले इसी आयत से आरंभ किया है जो सूरह फ़ातिह: में है कि अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ) अर्थात् समस्त पूर्ण एवं पवित्र विशेषताएँ ख़ुदा से विशिष्ट है जो समस्त लोकों का रब्ब (प्रतिपालक) है। आलम (लोक) के शब्द में समस्त भिन्न-भिन्न क़ौमें भिन्न-भिन्न युग तथा भिन्न-भिन्न देश सम्मिलित हैं, और इस आयत से जो पवित्र क़ुर्आन आरंभ किया गया, यह वास्तव में उन क़ौमों का खण्डन है जो ख़ुदा तआला के सामान्य प्रतिपालन तथा बरकत को अपनी ही क़ौम तक सीमित रखते हैं तथा अन्य क़ौमों को ऐसा समझते हैं जैसे मानो वे ख़ुदा तआला के बन्दे ही नहीं और जैसे मनो ख़ुदा ने उनको पैदा करके फिर रद्दी की भांति फेंक दिया

है, या उनको भूल गया है और या (नऊज़ुबिल्लाह) वे उसके पैदा किए हुए ही नहीं हैं। जैसा कि उदाहरण के तौर पर यहूदियों तथा ईसाइयों का अब तक यह विचार है कि जितने ख़ुदा के नबी और रसूल आए हैं वे केवल यहूद के ख़ानदान से आए हैं और ख़ुदा अन्य क़ौमों से कुछ ऐसा नाराज़ है कि उनको गुमराही और लापरवाही में देख कर फिर भी उनकी कुछ परवाह नहीं की। जैसा कि इंजील में भी लिखा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम कहते हैं कि मैं केवल इस्राईल की भेड़ों के लिए आया हूँ। इस स्थान पर हम एक अनुमान के तौर पर कहते हैं कि ख़ुदा होने का दावा करके फिर ऐसी संकीर्णता का वाक्य कहना बड़े आश्चर्य की बात है। क्या मसीह केवल इस्राईलियों का ख़ुदा था तथा अन्य क़ौमों का ख़ुदा न था कि ऐसा वाक्य उसके मुँह से निकला कि मुझे अन्य क़ौमों के सुधार और मार्ग-दर्शन से कुछ मतलब नहीं।

अत: यहूदियों और ईसाइयों का यही मत है कि सारे नबी और रसूल उन्हीं के ख़ानदान से आते रहे हैं और उन्हीं के ख़ानदान में ख़ुदा की किताबें उतरती रही है और फिर ईसाइयों की आस्थानुसार वह इल्हाम और वह्यी (ईशवाणी) का सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हो गया और ख़ुदा के इल्हाम पर मुहर लग गयी।

इन्हीं विचारों के पाबन्द आर्य साहिबान भी पाए जाते हैं अर्थात् जैसे यहूदी और ईसाई नबुव्वत और इल्हाम को इस्राईली ख़ानदान तक ही सीमित रखते हैं और अन्य समस्त क़ौमों को इल्हाम पाने के गर्व से वंचित कर रहे हैं। यही आस्था मानव क़ौम के दुर्भाग्य से आर्य साहिबान ने भी धारण रख रखी है। अर्थात् वे भी यही आस्था रखते हैं कि ख़ुदा की वह्यी और इल्हाम का सिलसिला आर्यवर्त की चारदीवारी से कभी बाहर नहीं गया। हमेशा इसी देश से चार ऋृषि चुने जाते हैं और हमेशा

वेद ही बार-बार उतरता है और हमेशा वैदिक संस्कृत ही इस इल्हाम के लिए विशिष्ट की गयी है।

अतएव ये दोनों क़ौमें ख़ुदा को समस्त लोकों का प्रतिपालक नहीं समझतीं अन्यथा कोई कारण मालूम नहीं होता कि जिस हालत में ख़ुदा रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का प्रतिपालक) कहलाता है न कि केवल इस्राईलियों का रब्ब या केवल आर्यों का रब्ब तो वह एक क़ौम विशेष से क्यों ऐसा स्थायी संबंध पैदा करता है जिसमें स्पष्ट तौर पर पक्षपात और तरफ़दारी पायी जाती है। अत: इन आस्थाओं के खण्डन के लिए ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन को इसी आयत से प्रारंभ किया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ और उसने कई स्थानों पर पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि यह बात सही नहीं है कि किसी विशेष क़ौम या विशेष देश में ख़ुदा के नबी आते रहते हैं बल्कि ख़ुदा ने किसी क़ौम और किसी देश को भुलाया नहीं। पवित्र क़ुर्आन में भिन्न-भिन्न प्रकार के उदाहरणों में बताया गया है कि जिस प्रकार कि ख़ुदा प्रत्येक देश के निवासियों के लिए उनकी स्थिति के अनुसार उनकी शारीरिक तर्बियत (प्रशिक्षण) करता आया है इसी प्रकार उसने प्रत्येक देश तथा प्रत्येक क़ौम को आध्यातिमक तरबियत से भी लाभान्वित किया है। जैसा कि वह पवित्र क़ुर्आन में एक स्थान पर फ़रमाता है

وَاِنْ مِّنْ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیْھَا نَذِیْرٌ (फ़ातिर-25)

कि कोई ऐसी क़ौम नहीं जिसमें कोई नबी या रसूल नहीं भेजा गया।

अत: यह बात बिना किसी बहस के स्वीकार करने योग्य है कि वह सच्चा और सर्वांगपूर्ण ख़ुदा जिस पर ईमान लाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है वह रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का प्रतिपालक) है और उसका प्रतिपालन किसी विशेष क़ौम तक सीमित नहीं और न किसी समय

विशेष तक और न किसी देश विशेष तक अपितु वह समस्त क़ौमों का रब्ब (प्रतिपालक) है तथा समस्त युगों का प्रतिपालक है और समस्त स्थानों का वही प्रतिपालक है और समस्त देशों का वही प्रतिपालक है और समस्त बरकतों का वही उद्‌गम है तथा प्रत्येक भौतिक एवं आध्यात्मिक (रूहानी) शक्ति उसी से है तथा उसी से संसार की सब वस्तुएँ पोषण पाती हैं और प्रत्येक अस्तित्व का वही सहारा है।

ख़ुदा की बरकतें सार्वजनिक है जो समस्त क़ौमों, समस्त देशों और समस्त युगों पर छायी हुई है। यह इसलिए हुआ ताकि किसी क़ौम को शिकायत करने का अवसर न मिले और यह न कहें कि ख़ुदा ने अमुक-अमुक क़ौम पर उपकार किया परन्तु हम पर न किया या अमुक क़ौम को उस की तरफ़ से किताब मिली ताकि वह उस से हिदायत पाए परन्तु हम को न मिली या अमुक युग में वह अपनी वह्यी, इल्हाम तथा चमत्कारों के साथ प्रकट हुआ परन्तु हमारे युग में गुप्त रहा। अत: उसने सार्वजनिक बरकतें दिखला कर उन समस्त आरोपों का निवारण कर दिया और अपने ऐसे विशाल आचरण प्रदर्शित किए कि किसी क़ौम को अपने शारीरिक एवं आध्यातिमक फ़ैज़ों से वंचित नहीं रखा और न किसी युग को वंचित ठहराया।

अत: जब कि हमारे ख़ुदा के ये आचरण हैं तो हमारे लिए उचित है कि हम भी उन्हीं आचरणों का अनुसरण करें। इसलिए हे मेरे देशवासी भाइयो! यह संक्षिप्त पत्रिका जिसका नाम है पैग़ाम-ए-सुलह (मैत्री-सन्देश) आदरपूर्वक आप सब सज्जनों की सेवा में प्रस्तुत की जाती है और हार्दिक सच्चाई के साथ दुआ की जाती है कि वह शक्तिमान ख़ुदा आप लोगों के दिलों में स्वयं इल्हाम करे और हमारी हमदर्दी का राज़ आप के दिलों पर खोल दे ताकि आप इस मित्रवत् उपहार को किसी विशेष उद्‌देश्य और

स्वार्थ पर आधारित न समझें। प्रियजनो! आख़िरत (परलोक) का मामला तो जन सामान्य पर प्राय: गुप्त रहता है और परलोक का रहस्य उन्हीं पर खुलता है जो मरने से पूर्व मरते हैं परन्तु दुनिया की नेकी और बदी (भलाई और बुराई) को प्रत्येक दूरदर्शी बुद्धि पहचान सकती है।

यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि एकता एक ऐसी बात है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार से दूर नहीं हो सकतीं और वे संकट जो किसी उपाय से हल नहीं हो सकते वे एकता से हल हो जाती हैं। अत: एक बुद्धिमान से दूर है कि एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे। हिन्दू तथा मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असंभव विचार है कि किसी समय जैसे हिन्दू एकत्र होकर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल देंगे या मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं को देश से निष्कासित कर देंगे अपितु अब तो हिन्दू-मुसलमान का परस्पर चोली-दामन का साथ हो रहा है। यदि एक पर कोई संकट आए तो दूसरा भी उसमें भागीदार हो जाएगा और यदि एक क़ौम दूसरी क़ौम को मात्र अपने व्यक्तिगत अभिमान और बड़प्पन से तिरस्कृत करना चाहेगी तो वह भी तिरस्कार से सुरक्षित नहीं रहेगी और यदि उनमें से कोई अपने पड़ोसी के साथ सहानुभूति करने में असमर्थ रहेगा तो उसकी हानि वह स्वयं भी उठाएगा। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश की चिन्ता में उसका उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जो एक टहनी पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग अल्लाह तआला की कृपा से शिक्षित भी हो गए अब वैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को त्याग कर सहानुभूति धारण करना आप की बुद्धिमत्ता के यथायोग्य है। संसार के संकट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है जो बिल्कुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है।

इसलिए इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी सहमति के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो इस जलती हुई आग को शीतल कर दे और प्यास के समय मरने से बचाए।

ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आपको सुलह (मैत्री) के लिए बुलाता है, जबकि दोनों क़ौमों को सुलह की बहुत आवश्यकता है। संसार पर नाना प्रकार की विपत्तियाँ आ रही हैं, भूकम्प आ रहे हैं, अकाल पड़ रहा है और प्लेग ने भी अभी पीछा नहीं छोड़ा और जो कुछ ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है वह भी यही है कि यदि संसार अपने बुरे कर्मों से नहीं रुकेगा और बुरे कार्यों से तोब: नहीं करेगी तो संसार पर कठोर से कठोर बालाएं आएँगी। एक विपत्ति अभी समाप्त नहीं हुई होगी कि दूसरी विपत्ति प्रकट हो जाएगी। अन्तत: मनुष्य अत्यन्त दुखी हो जाएँगे कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से संकटों के बीच में आकर पागलों की भांति हो जाएँगे। अत: हे मेरे देशवासी भाइयो! इससे पूर्व कि वे दिन आएँ होशियार हो जाओ और चाहिए कि हिन्दू एवं मुसलमानों को परस्पर सुलह कर लेनी चाहिए और जिस क़ौम में कोई ज़्यादती है जो सुलह में बाधक हो उस ज़्यादती को वह क़ौम छोड़ दे अन्यथा परस्पर दुश्मनी का सम्पूर्ण गुनाह उसी क़ौम की गर्दन पर होगा।

यदि कोई कहे कि ऐसा क्योंकर हो सकता है कि सुलह हो जाए जबकि परस्पर धार्मिक मतभेद सुलह के लिए एक ऐसी बाधक बात है जो दिन-प्रतिदिन दिलों में फूट डालती जाती है।

मैं इसके उत्तर में यह कहूँगा कि वास्तव में धार्मिक मतभेद केवल उस मतभेद का नाम है जिसके दोनों ओर बुद्धि और न्याय तथा जिनकी बुनियाद अनुभव में आई हुई बातों पर हो, अन्यथा मनुष्य को इसी बात के लिए तो अक्ल दी गई है कि वह ऐसा पहलू धारण करे जो बुद्धि और

इंसाफ़ से दूर न हो तथा जो मौजूद और स्पष्ट बातों के विपरीत न हो। छोटे-छोटे मतभेद सुलह के बाधक नहीं हो सकते अपितु, वही मतभेद सुलह का बाधक होगा जिसमें किसी के मान्य रसूल तथा मान्य इल्हामी किताब पर अपमान एवं झुठलाने के साथ हमला किया जाए।

इसके अतिरिक्त सुलह प्रिय लोगों के लिए यह एक प्रसन्नता का स्थान है कि जितनी शिक्षा इस्लाम में पायी जाती है वह शिक्षा वैदिक शिक्षा के किसी न किसी भाग में मौजूद है। जैसा यद्यपि नया धर्म आर्य समाज का यह सिद्धान्त है कि वेदों के बाद ख़ुदा के इल्हाम पर मुहर लग गई है, परन्तु जो हिन्दू धर्म में कभी-कभी अवतार पैदा होते रहे हैं जिनके करोड़ों अनुयायी इसी देश में पाए जाते हैं, उन्होंने उस मुहर को अपने इल्हाम के दावे से तोड़ दिया है। जैसा कि एक महान अवतार जो इस देश तथा बंगाल में बड़ी प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठता के साथ माने जाते हैं जिन का नाम श्री कृष्ण है। वह अपने मुल्हम[1]✷ होने का दावा करते हैं तथा उनके अनुयायी उन्हें न केवल मुल्हम अपितु परमेश्वर मानते हैं परन्तु इस में सन्देह नहीं कि श्री कृष्ण अपने समय के नबी और अवतार थे और ख़ुदा उन से वार्तालाप करता था।

इसी प्रकार इस अन्तिम युग में हिन्दू जाति में से बाबा नानक साहिब हैं जिनकी महानता की ख्याति इस सम्पूर्ण देश में सार्वजनिक है और इस देश में जिनका अनुसरण करने वाली वह क़ौम है जो सिक्ख कहलाती है जो बीस लाख से कम नहीं हैं। बाबा साहिब अपनी जन्म साखियों और ग्रन्थ में स्पष्ट तौर पर इल्हाम का दावा करते हैं। यहाँ तक कि एक स्थान पर वह अपनी जन्म साखी में लिखते हैं कि मुझे

---

[1]✷ **मुल्हम** - जिस पर इल्हाम किया गया हो। वह व्यक्ति जिसके हृदय में ग़ैब (परोक्ष) से कोई बात पड़े। (अनुवादक)

ख़ुदा की ओर से इल्हाम हुआ है कि इस्लाम धर्म सच्चा है। इसी कारण उन्होंने हज भी किया और सम्पूर्ण इस्लामी आस्थाओं की पाबन्दी की और नि:संदेह यह बात सिद्ध है कि उनके द्वारा चमत्कार और निशान भी प्रकट हुए हैं। और इस बात में कुछ सन्देह नहीं किया जा सकता कि बाबा नानक एक नेक और चुने हुए इन्सान थे तथा उन लोगों में से थे जिनको महाप्रतापी ख़ुदा अपने प्रेम का शरबत पिलाता है। वह हिन्दुओं में केवल इस बात की गवाही देने के लिए पैदा हुए थे कि इस्लाम ख़ुदा की ओर से है। जो व्यक्ति उन के वे तबर्रुक[2]✶ देखे जो डेरा बाबा नानक में मौजूद हैं जिन में बड़े ज़ोर के साथ बाबा नानक साहिब ने कलिमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की गवाही दी है। फिर वे तबर्रुक देखे जो गुरू हरसहाय ज़िला फ़ीरोज़पुर के स्थान पर मौजूद हैं, जिनमें एक पवित्र क़ुर्आन भी है। किस को इस बात में सन्देह हो सकता है कि बाबा नानक साहिब ने अपने पवित्र हृदय, पवित्र स्वभाव तथा अपनी पवित्र तपस्या से इस रहस्य को ज्ञात कर लिया था जो ज़ाहिरी पंडितों पर छुपा रहा। उन्होंने इल्हाम का दावा करके और ख़ुदा की ओर से निशान एवं चमत्कारी प्रदर्शित करके उस आस्था का भली भाँति खण्डन और रद्द कर दिया जो कहा जाता है कि वेद के बाद कोई इल्हाम नहीं और न निशान प्रकट होते हैं। नि:संदेह बाबा नानक साहिब का अस्तित्व हिन्दुओं के लिए ख़ुदा की ओर से एक रहमत (दया) थी और यों समझो कि वह हिन्दू धर्म का अन्तिम अवतार था, जिस ने इस नफ़रत को दूर करना चाहा था जो इस्लाम से हिन्दुओं के हृदयों में थी, परन्तु इस देश का यह भी दुर्भाग्य है कि हिन्दू धर्म ने बाबा नानक साहिब

---

[2]✶ **तबर्रुक -** धार्मिक महात्माओं और अवतारों की वे वस्तुएँ जो बरकत के तौर पर रखी जाएँ, तबरुकात कहलाती हैं। (अनुवादक)

की शिक्षा से कुछ लाभ प्राप्त नहीं किया अपितु पंडितों ने उन्हें कष्ट दिया कि वह जगह-जगह इस्लाम की प्रशंसा क्यों करते हैं। वह हिन्दू धर्म और इस्लाम में सुलह कराने आए थे। परन्तु खेद कि उसकी शिक्षा पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। यदि उनके अस्तित्व तथा उनकी पवित्र शिक्षाओं से कुछ लाभ उठाया जाता तो आज हिन्दू और मुसलमान सब एक होते। हाय अफ़सोस, हमें यह सोचकर रोना आता है कि ऐसा सदाचारी मनुष्य संसार में आया और गुज़र भी गया, परन्तु नादान लोगों ने उनके नूर से कुछ प्रकाश प्राप्त नहीं किया।

बहरहाल वह इस बात को सिद्ध कर गए कि ख़ुदा की वह्यी और ख़ुदा इल्हाम कभी समाप्त नहीं होता और ख़ुदा के निशान उसके चुने हुए पुरुषों के द्वारा हमेशा प्रकट होते रहते हैं, तथा इस बात की गवाही दे गए कि इस्लाम से शत्रुता प्रकाश से शत्रुता है।

इसी प्रकार मैं भी इस बात में अनुभव रखता हूँ कि ख़ुदा की वह्यी और उसका इल्हाम इस युग से कदापि समाप्त नहीं किया गया अपितु जिस प्रकार ख़ुदा पहले बोलता था अब भी बोलता है तथा जिस प्रकार पहले सुनता था अब भी सुनता है। यह नहीं कि अब उसकी वे अनादि विशेषताएँ निलंबित हो गई है। मैं संभवत: तीस वर्ष से ख़ुदा के वार्तालाप एवं संवाद से सम्मानित हूँ और मेरे हाथ पर उसने अपने सैकड़ों निशान दिखाए हैं जो हज़ारों गवाहों के देखने में आ चुके हैं तथा पुस्तकों और अख़बारों में प्रकाशित हो चुके हैं और ऐसी कोई क़ौम (क़ौम) नहीं जो किसी न किसी निशान की गवाह न हो।

अब इतनी निरन्तर गवाहियों के बावजूद आर्य समाज की यह शिक्षा जो अकारण वेदों से सम्बद्ध की जाती है क्योंकर स्वीकार करने योग्य है कि वे कहते हैं कि ख़ुदा के कलाम (वार्तालाप) और इल्हाम का सम्पूर्ण

सिलसिला वेदों पर समाप्त हो चुका है। तत्पश्चात् मात्र क़िस्सों पर आधार है। और अपनी इसी आस्था को हाथ में लेकर वे लोग कहते हैं कि वेदों के अतिरिक्त संसार में ख़ुदा के कलाम के नाम पर जितनी किताबें मौजूद हैं वे सब (नऊज़ुबिल्लाह) मनुष्यों के बनाए हुए झूठ हैं, हालाँकि वे किताबें अपनी सच्चाई का वेद से बहुत अधिक सबूत प्रस्तुत करती हैं और ख़ुदा की सहायता एवं मदद का हाथ उनके साथ है और ख़ुदा के विलक्षण निशान उन की सच्चाई पर गवाही देते हैं। फिर क्या कारण कि वेद तो ख़ुदा का कलाम (वाणी), परन्तु वे किताबें ख़ुदा का कलाम नहीं? और चूँकि ख़ुदा का अस्तित्व सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा गुप्त से अधिक गुप्त है। इसलिए बुद्धि भी इस बात को चाहती है कि वह अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए केवल एक किताब पर बस न करे अपितु विभिन्न देशों में से नबी चुन कर उनको अपना कलाम और इल्हाम उन्हें प्रदान करे ताकि कमज़ोर इन्सान जो बहुत शीघ्र सन्देह में ग्रस्त हो सकता है स्वीकार करने की दौलत से वंचित न रहे।

इस बात को बुद्धि स्वीकार करने के लिए कदापि तैयार नहीं है कि वह ख़ुदा जो सम्पूर्ण संसार का ख़ुदा है, जो अपने सूर्य से पूरब और पश्चिम को प्रकाशमान करता है और अपने बारिश (वर्षा) से प्रत्येक देश को प्रत्येक आवश्यकता के समय तृप्त करता है वह नऊज़ुबिल्लाह (हम ख़ुदा से शरण चाहते हैं) आध्यात्मिक प्रशिक्षण (रूहानी तर्बियत) में ऐसा कृपण और कंजूस है कि हमेशा के लिए एक ही देश तथा एक ही क़ौम और एक ही भाषा उसे पसन्द आ गई है। और मैं समझ नहीं सकता कि यह किस प्रकार का तर्कशास्त्र तथा किस प्रकार का फ़लसफ़ा है कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति की दुआ और प्रार्थना को उसकी भाषा में समझ तो सकता है और नफ़रत नहीं करता किन्तु इस बात से अत्यन्त नफ़रत

करता है कि वैदिक संस्कृत के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में हृदयों पर इल्हाम करे। यह दार्शनिकता या वेद-विद्या उस गुप्त पहेली की भांति है जिसे अब तक कोई मनुष्य हल नहीं कर सका।

मैं वेद को इस बात से पवित्र समझता हूँ कि उसने कभी अपने किसी पृष्ठ पर ऐसी शिक्षा प्रकाशित की हो कि जो न केवल बुद्धि के विरुद्ध हो अपितु परमेश्वर के पवित्र अस्तित्व पर कंजूसी और पक्षपात का धब्बा लगाती हो। बल्कि वास्तविकता यह है कि जब किसी इल्हामी किताब पर एक लम्बी अवधि गुज़र जाती है तो उसके अनुयायी कुछ तो अपनी मूर्खता के कारण तथा कुछ अपने स्वार्थों के कारण भूल से या जान बूझ कर उस किताब पर अपनी ओर से हाशिया (टीका-टिप्पणियाँ) चढ़ा देते हैं। चूँकि हाशिया चढ़ाने वाले भिन्न-भिन्न विचारधारा के लोग होते हैं। इसलिए एक धर्म से सैकड़ों धर्म पैदा हो जाते हैं।

और यह विचित्र बात है कि जिस प्रकार आर्य लोग यह आस्था रखते हैं कि हमेशा आर्य खानदानों तथा आर्यावर्त तक ही ख़ुदा के इल्हाम का सिलसिला सीमित रहा है और हमेशा वैदिक संस्कृति ही ख़ुदा के इल्हाम के लिए विशेष रही है और वह परमेश्वर की भाषा है। यही विचार यहूदियों का अपने खानदान तथा अपनी किताबों के बारे में है। उनके नज़दीक भी ख़ुदा की असली भाषा इब्रानी है और ख़ुदा के इल्हाम का सिलसिला हमेशा बनी इस्राईल तथा उन्हीं के देश तक सीमित रहा है, और जो व्यक्ति उनके ख़ानदान और उन की भाषा से अलग होने की स्थिति में नबी होने का दावा करे उसे वे नऊज़ुबिल्लाह झूठा समझते हैं।

अत: क्या यह भावसाम्य आश्चर्यजनक नहीं है कि इन दोनों क़ौमों ने अपने-अपने बयान में **एक ही विचार पर** पैर मारा है। इसी प्रकार संसार में अन्य भी कई फ़िर्क़े (समुदाय) हैं जो इसी विचार के पाबन्द

हैं। जैसे पारसी, जो अपने धर्म की बुनियाद वेद से कई अरब वर्ष पहले बताते हैं। इससे विदित होता है कि यह विचार (कि हमेशा के लिए अपने देश, अपने ख़ानदान तथा अपनी किताबों की भाषा को ही ख़ुदा की वह्यी और इल्हाम से विशिष्ट किया गया है) मात्र द्वेष तथा जानकारी की कमी से पैदा हुआ है। चूँकि पहले युग संसार पर ऐसे गुज़रे हैं कि एक क़ौम दूसरी क़ौम की परिस्थितियों से तथा एक देश अन्य देशों के अस्तित्व से पूर्णतया बेख़बर थी। अत: ऐसी ग़लती से प्रत्येक क़ौम को जो ख़ुदा की ओर से कोई किताब मिली या कोई ख़ुदा का रसूल और नबी उस क़ौम में आया तो उस क़ौम ने यही ख्याल कर लिया तो उस क़ौम ने यही सोच लिया कि जो कुछ ख़ुदा की तरफ़ से मार्ग दर्शन होना चाहिए था, वह यही है और ख़ुदा की किताब केवल उन्हीं के ख़ानदान तथा उन्हीं के देश को दी गई है और शेष समस्त संसार उस से वंचित पड़ा है।

इस विचार ने संसार को बहुत हानि पहुँचाई और वास्तव में आपसी वैर और वैमनस्य को बीज जो क़ौमों में बढ़ता गया यही विचार था। एक समय तक तो एक क़ौम दूसरी क़ौम से पर्दे में रही तथा एक देश दूसरे देश से गुप्त एवं छुपा रहा। यहां तक कि आर्यवर्त के विद्वानों का यह विचार था कि हिमालय पर्वत से आगे कोई आबादी नहीं।

फिर जब ख़ुदा ने बीच से पर्दा उठा लिया और पृथ्वी की आबादी के बारे में लोगों की जानकारियों में कुछ वृद्धि हो गई तो वह एक ऐसा युग था कि वे सम्पूर्ण विशेषताएँ जो इल्हामी किताबों तथा अपने ॠषियों और रसूलों के बारे में लोगों ने अपने ही मन से बना कर अपनी आस्थाओं में सम्मिलित कर ली थीं वे उनके हृदयों में बड़ी दृढ़ता से पत्थर पर खुदे हुछ चित्र की भांति हो गईं और प्रत्येक क़ौम यही विचार करती थी कि ख़ुदा का मुख्य केन्द्र हमेशा उन्हीं के देश में रहा है। चूंकि उन दिनों में

अधिकांश क़ौमों पर असभ्य स्वभावों का प्रभुत्व था और एक प्राचीन रस्म के विरोधी को तलवार के साथ उत्तर दिया जाता था। इसलिए किस में साहस था कि प्रत्येक क़ौम के अभिमान के आवेगों को शीतल करके उनके मध्य सुलह कराता। गौतम बुद्ध ने इस सुलह का इरादा किया था और वह इस बात को मानने वाला न था कि जो कुछ है वेद है आगे कुछ नहीं और न वह क़ौम और देश तथा ख़ानदान की विशिष्टता का इक़रार करने वाला था अर्थात् यह धर्म उसका नहीं था कि मानो वेद पर ही सब कुछ निर्भर है तथा यही भाषा, यही देश और यही ब्राह्मण परमेश्वर के इल्हाम के लिए सदैव के लिए उसकी अदालत में रजिस्टर्ड हो चुके हैं। इसलिए उसने इस मत भेद से बहुत दुःख उठाया तथा उसका नाम एक देहरियत और नास्तिक मत वाला रखा गया। जैसा कि अजकल यूरोप और अमरीका के समस्त अन्वेषक जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़ुदाई को स्वीकार नहीं करते तथा उनके हृदय इस बात को नहीं मानते कि ख़ुदा को भी सूली दे सकते हैं। वे समस्त लोग पादरी साहिबों लोगों के विचार में नास्तिक हैं।

अतः इसी प्रकार का बुद्ध भी नास्तिक ठहराया गया और जैसा कि दुष्ट विरोधियों का नियम है, जन साधारण को नफ़रत दिलाने के बहुत से लांछन उस पर लगाए गए। अन्ततः परिणाम यह हुआ कि बुद्ध आर्यवर्त से जो उसका जन्म स्थान और मातृभूमि थी निकाला गया और अब तक हिन्दू लोग बौद्ध धर्म और उसकी सफलता को बड़ी नफ़रत तथा तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कथनानुसार कि **नबी अपमानित नहीं परन्तु अपने देश में** गौतम बुद्ध ने दूसरे देश की ओर प्रवास (हिजरत) करके बड़ी सफलता प्राप्त की। जैसा कि वर्णन किया जाता है कि संसार का तीसरा भाग बौद्ध धर्म से

भरा है और अनुयायियों की अधिकता की दृष्टि से उसका मुख्य केन्द्र चीन और जापान है यद्यपि वह दक्षिणी रूस और अमरीका तक फैल गया है।

अब फिर हम पुन: मूल उद्देश्य की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि जिन युगों में एक धर्म दूसरे धर्म से अपरिचित तथा अनभिज्ञ था, इस अनभिज्ञता की अवस्था में यह एक अनिवार्य बात थी कि प्रत्येक क़ौम अपने धर्म तथा अपनी किताब पर ही निर्भर रहती परन्तु इस निर्भरता का अन्त में परिणाम यह हुआ कि जब एक देश दूसरे देश के अस्तित्व से अवगत हो गया और विभिन्न देशों के लोग एक दूसरे के धर्म को जानने वाले हो गए तो उन के सामने यह संकट आया कि एक देश का धर्म दूसरे देश के धर्म का सत्यापन कर सके। क्योंकि प्रत्येक धर्म के लिए जो शायराना तौर पर अतिशयोक्ति करके विशेषताएँ और श्रेष्ठताएँ निर्धारित हो चुकी थीं उनका दूर करना कुछ सरल कार्य न था। इसलिए प्रत्येक धर्मानुयायी ने दूसरे धर्म को झुठलाने पर कमर बाँध ली थी। ज़िन्दा-आवेस्ता (ज़रतुश्ती) के धर्म ने 'हमारे जैसा दूसरा कोई नहीं' का झण्डा खड़ा कर दिया और रसूल होने के सिलसिले को अपने खानदान तक ही सीमित रखा तथा अपने धर्म का इतना लम्बा इतिहास बताया कि वेद का इतिहास बताने वाले उनके सामने लज्जित हैं।

उधर इब्रानियों के धर्म ने तो सीमा ही पार कर दी कि हमेशा के लिए ख़ुदा का मुख्य केन्द्र सीरिया देश को ही ठहरा दिया गया और हमेशा उन्हीं के खानदान के चुने हुए लोग इस योग्य ठहराए गए कि वे देश के सुधार के लिए भेजे जाएँ परन्तु आदेश के तौर पर वह सुधार बनी इस्राईल तक ही सीमित रहा और उन्हीं के खानदान पर इल्हाम और ख़ुदा की वह्यी की मुहर लग गयी और जो दूसरा उठे वह झूठा कहलाए।

इसी प्रकार आर्यवर्त में भी बिलकुल यही विचार फैल गए जो

इस्राईलियों में फैले हुए थे तथा उनकी आस्थाओं की दृष्टि से परमेश्वर केवल आर्यवर्त का ही राजा है और राजा भी ऐसा जिसे दूसरे देशों की ख़बर ही नहीं और बिना किसी तर्क के यह माना जाता है कि जब से परमेश्वर है उसे आर्यवर्त की ही जलवायु पसन्द आ गयी है। वह कदापि नहीं चाहता कि दूसरे देशों में भी कभी दौरा करे और उन बेचारों की कभी ख़बर भी ले जिनको वह पैदा करके भूल गया।

दोस्तो! ख़ुदा के लिए यह सोचकर देखो कि क्या ये आस्थाएँ ऐसी हैं जिन को मानवीय स्वभाव स्वीकार कर सकता है या कोई अन्तर्आत्मा उनको अपने अन्दर स्थान दे सकती है। मैं नहीं समझ सकता कि यह किस प्रकार की बुद्धिमत्ता है कि एक ओर ख़ुदा को सम्पूर्ण संसार का ख़ुदा मानना और फिर उसी मुँह से यह भी कहना कि वह सम्पूर्ण संसार का प्रतिपालन करने से पृथक है और केवल एक क़ौम विशेष तथा देश विशेष पर उस की दया-दृष्टि है। बुद्धिमानो! स्वयं इन्साफ करो कि क्या ख़ुदा के भौतिक प्रकृति के नियम में इसकी कोई गवाही मिलती है। फिर उसका आध्यात्मिक (रूहानी) नियम क्यों ऐसे पक्षपात पर आधारित है। यदि बुद्धि से काम लिया जाए तो हर काम की भलाई या बुराई उसके परिणाम से भी ज्ञात हो सकती है। अत: मुझे इस बात को वर्णन करने की आवश्यकता नहीं कि ख़ुदा के उन महान नबियों का अनादर तथा उनको गालियाँ देना, जिन की ग़ुलामी एवं आज्ञापालन की परिधि में हर वर्ग के करोड़ों लोग दाख़िल हैं। इसका परिणाम कैसा है और अन्तत: उस का फल क्या है। क्योंकि ऐसी कोई क़ौम नहीं जो ऐसे परिणाम को कुछ न कुछ न देख चुकी हो।

हे प्रियजनो! पुराने अनुभव तथा बार-बार की परीक्षा ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि भिन्न-भिन्न क़ौमों के नबियों तथा रसूलों को

अपमान के साथ याद करना और उन को गालियाँ देना एक ऐसा ज़हर है जो न केवल अन्ततः शरीर को नष्ट करता है अपितु रूह (आत्मा) को भी नष्ट करके धर्म एवं संसार दोनों को तबाह करता है। वह देश आराम से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता जिसके निवासी एक दूसरे के धार्मिक पथ-प्रदर्शक के दोष निकालने तथा मानहानि में व्यस्त हैं तथा उन क़ौमों में सच्ची एकता कदापि नहीं हो सकती, जिन में से एक क़ौम या दोनों क़ौमें एक-दूसरे के नबी या ॠषि तथा अवतार को बुराई अथवा गालियों के साथ याद करते रहते हैं। अपने नबी या पेशवा का अनादर सुन कर किसे जोश नहीं आता। विशेष तौर पर मुसलमान एक ऐसी क़ौम है कि वह यद्यपि अपने नबी को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा तो नहीं बनाती, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उन सम्पूर्ण ख़ुदा के चुने हुए मनुष्यों से श्रेष्ठतम समझते हैं कि जो मां के पेट से पैदा हुए। अतः एक सच्चे मुसलमान से सुलह करना किसी स्थिति में उस स्थिति के अतिरिक्त संभव नहीं कि उनके पवित्र नबी के बारे में जब वार्तालाप हो तो आदर और पवित्र शब्दों के अतिरिक्त याद न किया जाए।

और हम लोग दूसरी क़ौमों के नबियों के बारे में अपशब्द कदापि नहीं निकालते अपितु, हम यही आस्था रखते हैं कि जिसने संसार में विभिन्न क़ौमों के लिए नबी आए हैं तथा करोड़ों लोगों ने उनको मान लिया है तथा संसार के किसी एक भाग में उनका प्रेम एवं प्रतिष्ठा पैदा हो गयी है और उस प्रेम और आस्था पर एक युग बीत गया है तो बस उनकी सच्चाई पर यही एक तर्क पर्याप्त है, क्योंकि यदि वे ख़ुदा की ओर से न होते तो यह मान्यता करोड़ों लोगों के हृदयों में न फैलती। ख़ुदा अपने मान्य पुरुषों का सम्मान दूसरों को कदापि नहीं देता और यदि कोई झूठा उनकी कुर्सी पर बैठना चाहे तो शीघ्र तबाह होता तथा मारा जाता है।

इसी आधार पर हम वेद को भी ख़ुदा की ओर से मानते हैं तथा उसके ऋषियों को महान और पवित्र समझते हैं। यद्यपि हम देखते हैं कि वेद की शिक्षा पूर्ण रूप से किसी समुदाय को ख़ुदा को मानने वाला (उपासक) नहीं बना सकी और न बना सकती थी। तथा जो लोग इस देश में मूर्तिपूजक, अग्निपूजक, सूर्यपूजक, गंगा के पुजारी, हज़ारों देवताओं के पुजारी या जैन मत या शाक्त मतवाले पाए जाते हैं। वे समस्त लोग अपने धर्मों को वेद की ही ओर सम्बद्ध करते हैं और वेद एक ऐसी संक्षिप्त किताब है कि ये समस्त सम्प्रदाय उसी में से अपने-अपने मतलब निकालते हैं। तथापि ख़ुदा की शिक्षानुसार हमारी दृढ़ आस्था है कि वेद मनुष्य का बनाया हुआ झूठ नहीं है। मनुष्य के बनाए हुए झूठ में यह शक्ति नहीं होती कि करोड़ों लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर ले और फिर एक स्थायी सिलसिला स्थापित कर दे। यद्यपि हमने वेद में पत्थर की उपासना की चर्चा तो कहीं नहीं पढ़ी, किन्तु निःसंदेह अग्नि, वायु, जल, चन्द्र और सूर्य इत्यादि की उपासना से वेद भरा हुआ है तथा किसी श्रुति में इन वस्तुओं की उपासना से मना नहीं किया गया। अब इस का फैसला कौन करे कि हिन्दुओं के अन्य समस्त समुदाय झूठे हैं और केवल नया आर्यों का सम्प्रदाय सच्चा। जो लोग वेद के सन्दर्भ से इन वस्तुओं की उपासना करते हैं उनके हाथ में यह ठोस सबूत है कि इन वस्तुओं की उपासना का वेद में स्पष्ट तौर पर वर्णन है और निषेध कहीं भी नहीं तथा यह कहना कि ये सब परमेश्वर के नाम हैं, अभी यह एक दावा है जो अभी सफाई से तय नहीं हुआ और यदि तय हो जाता तो कुछ कारण ज्ञात न होता कि बड़े-बड़े बनारस और दूसरे शहरों के आर्यों की आस्थाओं को स्वीकार न करते। तीस-पैंतीस वर्ष के प्रयासों के बावजूद बहुत ही थोड़े हिन्दुओं ने आर्य धर्म धारण किया है और सनातन धर्म

की तथा हिन्दुओं के अन्य सम्प्रदायों की तुलना में आर्य धर्म वाले इतने कम हैं कि जैसे कुछ भी नहीं और न उनका अन्य हिन्दू सम्प्रदायों पर कोई विशाल प्रभाव है। इसी प्रकार नियोग की शिक्षा जो वेद से सम्बद्ध की जाती है, यह भी वह बात है जो मानवीय स्वाभिमान एवं नैतिकता उसे स्वीकार नहीं करते। परन्तु जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है हम स्वीकार नहीं कर सकते कि वास्तव में यह वेद ही की शिक्षा है अपितु हमारी नेक नीयत बड़ी दृढ़ता से हमें इस बात की ओर ले जाती है कि ऐसी शिक्षाएँ किसी नफ़सानी (कामभावना) के उद्देश्य से बाद में वेद की ओर सम्बद्ध की गई हैं, और चूँकि वेद पर हज़ारों वर्ष गुज़र गए हैं इसलिए संभव है कि भिन्न-भिन्न युगों में वेद के कुछ भाष्यकारों ने कई प्रकार की कमी बेशी की होगी। अत: हमारे लिए वेद की सच्चाई का यही एक सबूत पर्याप्त है कि आर्यवर्त के कई करोड़ लोग हज़ारों वर्षों से उसे ख़ुदा का कलाम जानते हैं तथा संभव नहीं कि यह सम्मान किसी ऐसी वाणी को दिया जाए जो किसी झूठे की वाणी है।

फिर जब कि हम इन समस्त कठिनाइयों के बावजूद ख़ुदा से डर कर वेद को ख़ुदा की वाणी समझते हैं और जो कुछ उसकी शिक्षा में गलतियाँ हैं वे वेद के भाष्यकारों की गलतियाँ समझते हैं तो फिर पवित्र क़ुर्आन जो आरंभ से अन्त तक तौहीद (एकेश्वरवाद) से भरपूर है। उसमें किसी स्थान पर सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि की उपासना की शिक्षा नहीं दी अपितु स्पष्ट शब्दों में कहा है -

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ

(हा मीम अस्सज्द: - 38)

अर्थात् न सूर्य की उपासना करो और न चन्द्रमा की और न किसी अन्य सृष्टि की। उसकी उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया। इसके

अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा के पुरातन निशानों और ताज़ा निशानों की गवाही अपने साथ रखता है और ख़ुदा का अस्तित्व दिखाने के लिए एक आइना है। उस पर क्यों उज्जडता पूर्वकों जैसे प्रहार किए जाएँ और वह मामला हम से क्यों नहीं किया जाता जो हम आर्य लोगों से करते हैं और देश में शत्रुता एवं दुश्मनी का बीज बोया जाता है। क्या आशा की जाती है कि इसका परिणाम अच्छा होगा? क्या यह अच्छा मामला है कि एक व्यक्ति जो फूल देता है उस पर पत्थर फेंका जाए और जो दूध प्रस्तुत करता है उस पर पेशाब गिराया जाए?

यदि इस प्रकार की पूर्ण सुलह के लिए हिन्दू और आर्य सज्जन तैयार हों कि वे हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा का सच्चा नबी मान लें और भविष्य में अनादर करना एवं झुठलाना छोड़ दें, तो मैं सर्वप्रथम इस इक़रारनामः पर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ कि हम अहमदिया जमाअत के लोग हमेशा वेद का सत्यापन करने वाले होंगे तथा वेद और उसके ऋषियों का सम्मान तथा प्रेम से नाम लेंगे और यदि ऐसा नहीं करेंगे तो एक बड़ी राशि जुर्माने की जो तीन लाख रुपए से कम नहीं होगी। हिन्दू सज्जनों की सेवा में अदा करेंगे और यदि हिन्दू लोग हमारे साथ हार्दिक तौर पर सफाई करना चाहते हैं तो वे भी ऐसा ही इक़रार लिख कर उस पर हस्ताक्षर कर दें और उस की इबारत भी यही होगी कि -

हम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रिसालत और नबुव्वत पर ईमान लाते हैं और आपको सच्चा नबी और रसूल समझते हैं और भविष्य में आप को आदर एवं सम्मानपूर्वक याद करेंगे जैसा कि एक मानने वाले के यथोचित होगा और यदि हम ऐसा न करें तो जुर्माने की एक बड़ी राशि जो तीन लाख रुपए से कम नहीं होगी

अहमदी जमाअत के प्रमुख की सेवा में प्रस्तुत करेंगे।

याद रहे कि हमारी अहमदिया जमाअत अब चार लाख से कुछ कम नही है और ऐसे बड़े कार्य के लिए तीन लाख रुपया चन्दा कोई बड़ी बात नहीं है और जो लोग हमारी जमाअत से अभी बाहर हैं वास्तव में वे सब अस्थिर स्वभाव तथा परेशान विचार रखते हैं। वे लोग किसी ऐसे लीडर के अधीन नहीं हैं जो उनके नज़दीक अनुकरणीय है। इसलिए मैं उनके बारे में कुछ नहीं कह सकता। अभी तो वे लोग मुझे भी काफ़िर और दज्जाल कहते हैं। परन्तु मैं आशा रखता हूँ कि जब हिन्दू सज्जन मेरे साथ ऐसा इक़रार कर लेंगे तो ये लोग भी हरगिज़ ऐसी अनुचित हरकत नहीं करेंगे कि ऐसी सभ्य क़ौम की किताब तथा ऋषियों को बुरे शब्दों से याद करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ दिलाएँ। ऐसी गालियाँ तो वास्तव में उन्हीं लोगों की ओर सम्बद्ध की जाएँगी जो इस हरकत को करने वाले होंगे और चूँकि ऐसी हरकत शर्म और नैतिकता के विपरीत है। इसलिए मैं आशा नहीं रखता कि इस इक़रार के बाद वे लोग अपनी जीभ खोलें। परन्तु यह आवश्यक होगा कि इक़रार को सुदृढ़ करने के लिए उस पर दोनों पक्षों के दस-दस हज़ार लोगों के हस्ताक्षर हों।

प्यारो! सुलह जैसी कोई भी वस्तु नहीं। आओ हम इस इक़रार के द्वारा एक हो जाएँ और एक क़ौम बन जाएँ। आप देखते हैं कि आपसी झुठलाने से कितनी फूट पड़ गयी है और देश को कितनी हानि पहुँची है। आओ अब यह भी आज़मा लो कि आपसी सत्यापन की कितनी बरकतें हैं। सुलह का उत्तम उपाय यही है, अन्यथा किसी अन्य पहलू से सुलह करना ऐसा ही है जैसे कि एक फोड़े को जो साफ और चमकता हुआ दिखाई देता है उसी स्थिति में छोड़ दें और उसकी ज़ाहरी चमक पर प्रसन्न हो जाएँ। हालाँकि उसके अन्दर सड़ी एवं दुर्गन्धयुक्त पीप मौजूद है।

मुझे यहाँ इन बातों की चर्चा करने की कुछ आवश्यकता नहीं कि वह कपट और फ़साद जो हिन्दू और मुसलमानों में आजकल बढ़ता जाता है। इसके कारण धार्मिक मतभेदों तक सीमित नहीं हैं अपितु इसके अन्य कारण भी हैं जो सांसारिक इच्छाओं एवं समस्याओं से संबंधित हैं। जैसे हिन्दुओं की प्रारंभ से यह इच्छा है कि सरकार और देश के मामलों में उनका हस्तक्षेप हो या कम से कम यह कि सरकारी मामलों में उनसे राय ली जाए और सरकार उनकी प्रत्येक शिकायत को ध्यान से सुने और सरकार के बड़े-बड़े पद अंग्रेज़ों की भांति उन्हें भी मिला करें। मुसलमानों से यह ग़लती हुई कि हिन्दुओं के हम संख्या में कम हैं और यह सोचा कि इन प्रयासों में भागीदार न हुए और सोचा कि इन समस्त प्रयासों का यदि कुछ लाभ है तो वह हिन्दुओं के लिए है न कि मुसलमानों के लिए। इसलिए न केवल भागीदारी से पृथक रहे अपितु विरोध करके हिन्दुओं के प्रयास में रुकावट हुए जिससे वैर में वृद्धि हुई।

मैं स्वीकार करता हूँ कि इन कारणों से भी मूल शत्रुता पर हाशिए चढ़ गए हैं। परन्तु मैं कादपि स्वीकार नहीं करूंगा कि मूल कारण यही है। मुझे उन लोगों की राय से सहमति नहीं है, जो कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमानों की परस्पर शत्रुता तथा आपस की फूट का कारण धार्मिक झगड़े नहीं हैं। मूल झगड़े राजनीतिक हैं।

यह बात प्रत्येक व्यक्ति सरलतापूर्वक समझ सकता है कि मुसलमान इस बात से क्यों डरते हैं कि अपने वैध अधिकारों की मांगों में हिन्दुओं के साथ सम्मिलित हो जाएँ तथा क्यों आज तक उनकी कांग्रेस में सम्मिलित होने से इन्कार करते रहे हैं और क्यों अन्ततः हिन्दुओं की राय को उचित महसूस करके उनके क़दम पर क़दम रखा, परन्तु अलग होकर उनके मुक़ाबले पर एक मुस्लिम अंजुमन स्थापित कर दी। किन्तु उनकी

भागीदारी को स्वीकार न किया।

सज्जनो! इस का कारण वास्तव में धर्म ही है इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। यदि आज वही हिन्दू कलिमा तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ कर मुसलमानों से गले मिल लें या मुसलमान ही हिन्दू बन कर अग्नि-वायु इत्यादि की उपासना वेद के आदेशानुसार प्रारंभ कर दें और इस्लाम को अलविदा कह दें तो जिन झगड़ों का नाम अब राजनीतिक रखते हैं वह एक क्षण में ऐसे समाप्त हो जाएँ कि जैसे कभी थे ही नहीं।

अत: इस से स्पष्ट है कि समस्त वैर और द्वेष की जड़ वास्तव में धार्मिक मतभेद है। यही धार्मिक मतभेद हमेशा से जब चरम सीमा तक पहुँचता रहा है तो ख़ून की नदियाँ बहाता रहा है। हे मुसलमानो! जब कि हिन्दू सज्जन तुम्हें धार्मिक मतभेद के कारण एक ग़ैर क़ौम समझते हैं और तुम भी इस कारण से उनको एक ग़ैर क़ौम समझते हो। इसलिए जब तक इस कारण का निवारण नहीं होगा, तुम में और उन में क्योंकर एक सच्ची सफाई पैदा हो सकती है। हां संभव है कि मक्कारी के तौर पर आपस में कुछ दिनों के लिए मेलजोल भी हो जाए, परन्तु वह हार्दिक शुद्धता जिसे वास्तव में सफ़ाई कहना चाहिए केवल उसी स्थिति में पैदा होगी जबकि आप लोग वेद और वेद के ऋषियों को सच्चे हृदय से ख़ुदा की ओर से स्वीकार कर लोगे। और ऐसा ही हिन्दू लोग भी अपनी संकीर्णता को दूर करके हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नबुव्वत का सत्यापन कर लेंगे। याद रखो और भली भांति स्मरण रखो कि तुम में और हिन्दू सज्जनों में सच्ची सुलह कराने वाला केवल यही एक उपाय और यही ऐसा पानी है जो दिल की गन्दगियों को धो देगा। और यदि वे दिन आ गए हैं कि ये दोनों बिछड़ी हुई क़ौमें आपस में मिल जाएँ

तो ख़ुदा उनके दिलों को भी इस बात के लिए खोल देगा, जिसके लिए हमारे दिल को खोल दिया है।

परन्तु इसके साथ आवश्यक होगा कि हिन्दू लोगों के साथ सच्ची सहानुभूति के साथ व्यवहार करो। अच्छा सदव्यवहार और नर्मी अपनी आदत बना लो और स्वयं को ऐसे कार्यों से अलग रखो जिन से उन्हें दु:ख पहुँचे परन्तु वे कार्य हमारे धर्म में न तो अनिवार्यताओं में से हों और न धार्मिक कर्त्तव्यों में से। अत: यदि हिन्दू लोग अपनी हार्दिक सच्चाई से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चा नबी मान लें और उन पर ईमान लाएँ तो यह फूट जो गाय के कारण है उसको भी मध्य से हटा दिया जाए। जिस वस्तु को हम हलाल (वैध) जानते हैं हम पर अनिवार्य नहीं कि अवश्य उसको इस्तेमाल भी करें। बहुत सी ऐसी वस्तुएँ हैं कि हम हलाल तो समझते हैं परन्तु कभी हम ने इस्तेमाल नहीं कीं। उन से अच्छा व्यवहार तथा उपकार करना हमारे धर्म की वसीयतों में से एक वसीयत है। ख़ुदा को एक तथा भागीदार रहित जानना। इसलिए एक आवश्यक एवं लाभप्रद कार्य के लिए अनावश्यक का छोड़ना ख़ुदा की शरीअत के विरुद्ध नहीं। हलाल जानना और बात है तथा इस्तेमाल करना और बात। धर्म यह है कि ख़ुदा की वर्जित की हुई चीज़ें से बचना तथा उसकी प्रसन्नता के मार्गों की ओर दौड़ना और उसकी समस्त सृष्टि से नेकी और भलाई करना, और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना तथा संसार के समस्त पवित्र नबियों और रसूलों को अपने-अपने समय में ख़ुदा की ओर से नबी और सुधारक मानना तथा उनमें फूट न डालना और प्रत्येक मनुष्य से सेवा-भाव के साथ व्यवहार करना। हमारे धर्म का निचोड़ यही है। परन्तु जो लोग अकारण ख़ुदा से निर्भीक होकर हमारे महान नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुरे शब्दों से

याद करते और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अपवित्र लांछन लगाते और गालियाँ देने से नहीं रुकते हैं, उनसे हम कैसे सुलह करें। मैं सच सच कहता हूँ कि हम खारी ज़मीन (कल्लर वाली ज़मीन) के साँपों और जंगलों के भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं, परन्तु उन लोगों से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी पर जो हमें अपनी जान (प्राण) और माता-पिता से भी प्यारा है, गन्दे प्रहार करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मृत्यु दे। हम ऐसा काम करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे।

मैं इस समय किसी विशेष क़ौम की अकारण भर्त्सना करना नहीं चाहता और न किसी का हृदय दुखाना चाहता हूँ अपितु अत्यन्त खेद के साथ आह भरकर मुझे यह कहना पड़ा है कि इस्लाम वह पवित्र सुलह कराने वाला धर्म था, जिस ने किसी क़ौम के पेशवा पर प्रहार नहीं किया तथा क़ुर्आन वह सम्मान योग्य किताब है जिसने क़ौमों में सुलह की नींव रखी और प्रत्येक क़ौम के नबी को मान लिया। सम्पूर्ण संसार में यह गर्व विशेष तौर पर पवित्र क़ुर्आन को प्राप्त है। जिसने संसार के बारे में हमें यह शिक्षा दी कि -

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ

(आले इमरान - 85)

अर्थात् हे मुसलमानो तुम यह कहो कि हम संसार के समस्त नबियों पर ईमान लाते हैं और उनमें यह अन्तर नहीं करते कि कुछ को स्वीकार करें और कुछ को अस्वीकार कर दें। यदि ऐसी सुलह कराने वाली कोई अन्य इल्हामी किताब है तो उसका नाम बताओ। पवित्र क़ुर्आन ने ख़ुदा की व्यापक दया को किसी खानदान के साथ विशिष्ट नहीं किया। इस्राईली खानदान के जितने नबी थे, क्या याक़ूब अलैहिस्सलाम और क्या इस्हाक़ अलैहिस्सलाम और क्या मूसा

अलैहिस्सलाम क्या दाऊद अलैहिस्सलाम और क्या ईसा अलैहिस्सलाम सबकी नबुव्वत को स्वीकार कर लिया और हर एक क़ौम के नबी चाहे हिन्दुस्तान में हुए हैं और चाहे फ़ारस में। किसी को मक्कार और महाझूठा नहीं कहा बल्कि स्पष्ट तौर पर कह दिया कि हर एक क़ौम और बस्ती में नबी आए हैं, और समस्त क़ौमों के लिए सुलह की नींव डाली। परन्तु खेद कि इस सुलह कराने वाले नबी को प्रत्येक क़ौम गाली देती हैं तथा तिरस्कार की दृष्टि से देखती है।

हे मेरे प्रिय देशवासियो! मैंने आपकी सेवा में यह वर्णन इसलिए नहीं किया कि मैं आपको दु:ख दूँ या आपका दिल तोड़ूँ, अपितु मैं अत्यन्त नेक नीयत के साथ यह कहना चाहता हूँ कि जिन क़ौमों ने यह आदत अपना रखी है और अपने धर्म में यह अवैध ढंग अपना रखा है कि अन्य क़ौमों के नबियों को अपशब्दों एवं गालियों से याद करें। वे न केवल अनुचित हस्तक्षेप से जिसके साथ उनके पास कोई सबूत नहीं। ख़ुदा के गुनाहगार हैं अपितु वे उस गुनाह के भी हैं कि मानव जाति में फूट और शत्रुता का बीज बोते हैं। आप दोषी दिल थाम कर मुझे इस बात का उत्तर दें कि यदि कोई व्यक्ति किसी के पिता को गाली दे या उसकी मां पर कोई लांछन लगा दे तो क्या वह अपने पिता के सम्मान पर स्वयं प्रहार नहीं करता और यदि वह व्यक्ति जिसे ऐसी गाली दी गई है उत्तर में उसी प्रकार गाली सुना दे तो क्या यह कहना अनुचित होगा कि सामने से गाली दिए जाने का कारण वास्तव में वही व्यक्ति है जिसने गाली देने में पहल की। इस स्थिति में वह अपने माता-पिता के सम्मान का स्वयं शत्रु होगा।

ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में हमें इतने आदर एवं अख़लाक़ (शिष्टाचार) का पाठ पढ़ाया है कि वह कहता है कि -

لَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ

(अल अन्आम - 109)

अर्थात् तुम मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) की मूर्तियों को भी गाली मत दो कि वे फिर तुम्हारे ख़ुदा को गालियाँ देंगे। क्योंकि वे उस ख़ुदा को जानते नहीं। अब देखो कि इसके बावजूद कि ख़ुदा की शिक्षा के अनुसार मूर्ति कुछ चीज़ नहीं है, परन्तु फिर भी ख़ुदा मुसलमानों को ये शिष्टाचार सिखाता है कि मूर्तियों को बुरा भला कहने से अपनी ज़ुबान बन्द रखो और केवल नर्मी से समझाओ। ऐसा न हो कि वे लोग उग्र होकर ख़ुदा को गालियाँ निकालें और उन गालियों का कारण तुम ठहर जाओ। अत: उन लोगों का क्या हाल है जो इस्लाम के उस महान नबी को गालियाँ देते तथा उसे अनादरपूर्ण शब्दों से याद करते और सभ्य लोगों की तरह उनके सम्मान और आचरण पर प्रहार करते हैं। वह महान नबी जिस का नाम लेने से इस्लाम के बड़े-बड़े बादशाह सिंहासन से उतरते हैं और उसके आदेशों के सामने सर झुकाते तथा स्वयं को उसके तुच्छ दासों में से समझते हैं। क्या यह सम्मान ख़ुदा की ओर से नहीं। ख़ुदा के दिए हुए सम्मान के मुक़ाबले पर तिरस्कार करना उन लोगों का काम है जो ख़ुदा से लड़ना चाहते हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा के वह प्रतिष्ठित रसूल हैं जिन का समर्थन और सम्मान प्रकट करने के लिए ख़ुदा ने संसार को बड़े-बड़े नमूने दिखाए हैं। क्या यह ख़ुदा के हाथ का काम नहीं, जिसने बीस करोड़ मनुष्यों का मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चौखट पर सिर झुका रखा है। यद्यपि प्रत्येक नबी अपनी नबुव्वत की सच्चाई के लिए कुछ सबूत रखता था, परन्तु जितने सबूत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नबुव्वत के बारे में जो आज तक प्रकट हो रहे हैं उनका उदाहरण किसी नबी में

नहीं पाया जाता।

आप लोग इस तर्क को नहीं समझ सकते कि जब पृथ्वी पाप से अपवित्र हो जाती है और ख़ुदा की तराज़ू में शुभ कर्मों की अपेक्षा दुष्कर्म दुराचार तथा निर्लज्जताएँ बहुत बढ़ जाती हैं तब ख़ुदा की दया चाहती है कि ऐसे समय में अपने किसी बन्दे को भेज कर पृथ्वी की खराबियों को दूर किया जाए। रोग वैद्य को चाहता है और आप लोग इस बात को समझने के लिए सब से अधिक योग्यता रखते हैं क्योंकि जैसा कि आप लोगों के कथनानुसार वेद ऐसे समय में नहीं आया जब कि पापों का तूफान मचा हुआ था अपितु ऐसे समय आया जबकि पृथ्वी पर पाप का कोई सैलाब (बाढ़) न था। तो क्या आप लोगों की दृष्टि में यह बात अनुमान से दूर है कि ऐसे समय में कोई नबी प्रकट हो, जबकि पाप का प्रचंड सैलाब प्रत्येक देश में अपनी तीव्र गति के साथ जारी हो।

मैं आशा नहीं रखता कि आप लोग उस ऐतिहासिक घटना से अपरिचित होंगे जब हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रिसालत के सिंहासन को अपने अस्तित्व से सम्मानित किया। वह युग एक ऐसा अंधकारमय युग था कि संसार की आबादी का कोई पहलू दुराचार एवं बुरी आस्थाओं से खाली न था और जैसा कि पंडित दयानन्द साहिब अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं - उस युग में भी इस देश आर्यवर्त में मूर्तिपूजा ने परमेश्वर की उपासना का स्थान ले लिया था और वैदिक धर्म में बहुत बिगाड़ हो गया था।

इसी प्रकार पादरी फण्डल साहिब लेखक पुस्तक ''मीज़ानुल हक़'' जो ईसाई धर्म का कट्टर समर्थक एक यूरोपियन अंग्रेज़ है। वह अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में समस्त क़ौमों से बिगड़ी हुई ईसाई क़ौम थी। उनके दुराचार

ईसाई धर्म की लज्जा और शर्म का कारण थीं और स्वयं पवित्र क़ुर्आन भी अपने उतरने की आवश्यकता के लिए यह आयत प्रस्तुत करता है-

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ (अर्रूम - 42)

अर्थात् जंगल भी बिगड़ गए और दरिया भी बिगड़ गए। इस आयत का तात्पर्य यह है कि कोई क़ौम चाहे असभ्य हालत रखती हो और चाहे बुद्धिमत्ता का दावा करती हो खराबी से रिक्त नहीं।

अब जब कि समस्त गवाहियों से भी सिद्ध होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग के लोग क्या पूर्बी और क्या पश्चिमी और क्या आर्यवर्त के रहने वाले और क्या अरब के मरुस्थल के निवासी और क्या प्रायद्वीपों में रहने वाले सब ही बिगड़ गए थे और एक भी नहीं था जिसका ख़ुदा के साथ संबंध शुद्ध हो। तथा दुष्कर्मियों ने पृथ्वी को अपवित्र कर दिया था। अत: क्या एक बुद्धिमान को यह बात समझ नहीं आ सकती कि यह वही समय और वही युग था जिसके बारे में बुद्धि निर्णय कर सकती है कि ऐसे अंधकारमय युग में अवश्य कोई महान नबी आना चाहिए था।

रहा यह प्रश्न कि उस नबी ने संसार में आकर क्या सुधार किया। इस प्रश्न का उत्तर जैसा कि एक मुसलमान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सुधार के बारे में दे सकता है मैं बलपूर्वक कहता हूँ कि ऐसा स्पष्ट और तर्कसंगत उत्तर न कोई ईसाई दे सकता है और न कोई यहूदी और न कोई आर्य।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रथम उद्देश्य अरब का सुधार था। अरब देश उस युग में ऐसी अवस्था में था कि बड़ी मुश्किल से कह सकते हैं कि वे इन्सान थे। कौन सी बुराई थी जो उन में न थी और कौन सा शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) था जो उनमें

प्रचलित न था। चोरी करना,डाका डालना उनका काम था और निर्दोष की हत्या करना उनके नज़दीक एक ऐसा मामूली काम था जैसा कि एक चींटी को पैरों के नीचे कुचल दिया जाए। बच्चों को क़त्ल करके उनका माल खा लेते थे, लड़कियों को जीवित ही पृथ्वी में गाड़ देते थे, व्यभिचार करने पर गर्व करते और अपने क़सीदों में ख़ुल्लम ख़ुल्ला अश्लील बातों का वर्णन करते थे, मदिरापान की इस क़ौम में प्रचुरता थी कि कोई घर भी मदिरा से खाली न था। द्यूतक्रीड़ा (जुए बाज़ी) मैं सब देशों से अग्रसर थे। जंगली जानवर भेड़िए और साँप भी उन से शर्माते थे।

फिर जब हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन के सुधार के लिए खड़े हुए और अपनी ध्यानशक्ति से उन के हृदयों को शुद्ध, करना चाहा तो उनमें थोड़े ही दिनों में ऐसा परिवर्तन पैदा हो गया कि वे उजड्डता को छोड़कर इन्सान बन गए और फिर इन्सान से सभ्य इन्सान और सभ्य इन्सान से ख़ुदा तर्स इन्सान और अन्तत: अल्लाह तआला के प्रेम में ऐसे लीन हो गए कि उन्होंने एक मुर्दे की भांति हर दु:ख को सहन किया। वे भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों से सताए गए और बड़ी बेदर्दी से कोड़ों से मारे गए और जलती हुई रेत पर लिटाए गए और बन्धक बनाए गए, भूखे-प्यासे रखकर मृत्यु तक पहुँचाए गए परन्तु उन्होंने हर एक संकट के समय क़दम आगे बढ़ाया और बहुत से उनमें ऐसे थे, कि उनके सामने उनके बच्चे क़त्ल किए गए और बहुत से ऐसे थे कि बच्चों के सामने वे सूली दिए गए और जिस श्रद्धा से उन्होंने ख़ुदा के मार्ग में प्राण दिए उसकी कल्पना करके रोना आता है। यदि उन के हृदयों पर ख़ुदा का यह अधिकार और उसके नबी के ध्यान का प्रभाव न था तो फिर वह क्या चीज़ थी जिसने उन्हें इस्लाम की ओर खींच लिया और एक विलक्षण परिवर्तन पैदा करके उनको ऐसे व्यक्ति की चौखट पर गिरने

की प्रेरणा दी कि जो लाचारी, मिस्कीनी तथा निर्धनता की हालत में मक्का की गलियों में अकेला फिरता था। अत: कोई रूहानी शक्ति थी जो उनको निचले स्थान से उठाकर ऊपर को ले गयी और आश्चर्यजनक बात यह है कि उनमें से अधिकांश उनकी कुफ्र की अवस्था में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जान के दुश्मन तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ून के प्यासे थे। अत: मैं तो इससे बड़ा कोई चमत्कार नहीं समझता कि एक निर्धन, ग़रीब, अकेले, लाचार ने उनके दिलों को प्रत्येक द्वेष से पवित्र करके अपनी ओर खींच लिया, यहां तक कि वह वैभवपूर्ण लिबास फेंक कर और टाट पहन कर सेवा में उपस्थित हो गए।

कुछ नासमझ जो इस्लाम पर जिहाद का आरोप लगाते हैं और कहते हैं कि यह सब लोग बलपूर्वक तलवार से मुसलमान किए गए थे। अफ़सोस, हज़ार अफ़सोस कि वे अपने अन्याय और सच को छुपाने में सीमा से गुज़र गए हैं। हाय अफ़सोस इन को क्या हो गया कि वे जान-बूझ कर सही घटनाओं से मुख फेर लेते हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अरब देश में एक बादशाह की हैसियत से प्रकट नहीं हुए थे ताकि यह समझा जाता कि चूँकि वह बादशाहों वाली शक्ति और वैभव अपने साथ रखते थे। इसलिए लोग जान बचाने के लिए उनके झण्डे के नीचे आ गए थे।

अत: प्रश्न तो यह है कि जब आप के लिए अपनी गरीबी, निर्धनता और अकेले होने की स्थिति में ख़ुदा की तौहीद और अपनी नुबव्वत के बारे में मुनादी आरंभ की थी तो उस समय किस तलवार के भय से लोग आप पर ईमान ले आए थे और यदि ईमान नहीं लाए थे तो फिर ज़बरदस्ती करने के लिए किस बादशाह से कोई लश्कर माँगा गया था और सहायता मांगी गयी थी। हे सत्याभिलाषियो! तुम निश्चित समझो कि

ये सब बातें उन लोगों के बनाए हुए झूठ हैं जो इस्लाम के कट्टर शत्रु हैं। इतिहास को देखो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वही एक अनाथ लड़का था जिसका बाप जन्म से कुछ दिन पश्चात् ही मृत्यु को प्राप्त हो गया था और मां भी केवल कुछ महीनों का बच्चा छोड़ कर मर गयी थी। तब वह बच्चा जिसके साथ ख़ुदा का हाथ था। बिना किसी सहारे के ख़ुदा की शरण में परवरिश पाता रहा और इस संकट और अनाथ होने के दिनों में कुछ लोगों की बकरियाँ भी चराईं और ख़ुदा के अतिरिक्त कोई अभिभावक न था और पच्चीस वर्ष तक पहुँच कर भी किसी चाचा ने भी आपको अपनी लड़की न दी क्योंकि जैसा कि प्रत्यक्ष दिखाई देता था आप इस योग्य न थे कि घरेलू खर्चे उठा सकें इसके अतिरिक्त अनपढ़ भी थे और कोई हुनर और पेशा नहीं जानते थे। फ़िर जब आप चालीस वर्ष की आयु तक पहुँचे तो सहसा आप का हृदय ख़ुदा की ओर खींचा गया। एक गुफ़ा जो मक्का से कुछ मील की दूरी पर है जिसका नाम 'हिरा' है। आप अकेले वहां जाते और गुफ़ा के अन्दर छिप जाते और अपने ख़ुदा को याद करते। एक दिन उसी गुफा में आप गुप्त तौर पर इबादत (उपासना) कर रहे थे। तब ख़ुदा तआला आप पर प्रकट हुआ और आप को आदेश हुआ कि दुनिया ने ख़ुदा के मार्ग को छोड़ दिया है और धरती गुनाह से भर गई है, इसलिए मैं तुझे अपना रसूल बनाकर भेजता हूँ। अब तू अन्य लोगों को सतर्क कर कि वे अज़ाब से पहले ख़ुदा की ओर लौटें। इस आदेश को सुन कर आप भयभीत हुए कि मैं एक अनपढ़ व्यक्ति हूँ और कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता। तब ख़ुदा ने आप के सीने में सम्पूर्ण रूहानी विद्याएँ भर दीं और आप के हृदय को प्रकाशमान किया था। आप के पवित्र सदाचरण के प्रभाव से ग़रीब और असहाय लोग आप के अनुसरण की परिधि में आने

प्रारंभ हो गए और जो बड़े-बड़े लोग थे उन्होंने शत्रुता में कमर बाँध ली। यहां तक कि अन्तत: आप का वध करना चाहा और कई पुरुष तथा कई स्त्रियाँ बड़ी यातना के साथ कत्ल कर दिए गए और अन्तिम आक्रमण यह किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वध करने के लिए आप के घर को घेर लिया, परन्तु जिसकी रक्षा ख़ुदा करे उसे कौन मारे। ख़ुदा ने आप को अपनी वह्यी (वाणी) द्वारा सूचना दी कि आप इस शहर से निकल जाओ और मैं हर कदम में तुम्हारे साथ हूँगा। अत: आप मक्का शहर से अबू बकर[रज़ि॰] को साथ लेकर निकल आए और तीन रात तक सौर गुफा में छिपे रहे। शत्रुओं ने पीछा किया तथा एक खोजी को लेकर गुफा तक पहुँचे। उस खोजी ने गुफा तक पैर का निशान पहुँचा दिया और कहा कि इस गुफा में तलाश करो। इसके आगे कदम नहीं गए और यदि इसके आगे गया है तो फिर आकाश पर चढ़ गया होगा, परन्तु ख़ुदा की क़ुदरत के चमत्कारों को कौन सीमाबद्ध कर सकता है। ख़ुदा ने एक ही रात में यह क़ुदरत दिखाई कि मकड़ी ने अपने जाल से गुफा का पूरा मुँह बन्द कर दिया और एक कबूतरी ने गुफा के मुख पर घोंसला बना कर अण्डे दे दिए। जब खोजी ने लोगों को गुफ़ा के अन्दर जाने की प्रेरणा दी तो एक वृद्ध व्यक्ति बोला कि यह खोजी तो पागल हो गया है। मैं तो इस मकड़ी के जाल को गुफ़ा के मुंह पर उस समय से देख रहा हूँ जबकि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अभी पैदा ही नहीं हुआ था। इस बात को सुनकर सब लोग चले गए और गुफ़ा का विचार त्याग दिया।

तत्पश्चात् आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गोपनीय तौर पर मदीना में पहुँचे और मदीना के अधिकांश लोगों ने आप को स्वीकार कर लिया। इस पर मक्का वालों का क्रोध भड़का और अफ़सोस किया

कि हमारा शिकार हमारे हाथ से निकल गया और फिर क्या था दिन रात इन्हीं षड़यन्त्रों में लगे रहे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किस प्रकार क़त्ल कर दें। और बहुत थोड़ा समूह मक्का वालों का जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया था वह भी मक्का से हिजरत करके विभिन्न देशों की ओर चले गए। कुछ लोगों ने हब्शा (इथोपिया) के बादशाह की शरण ले ली थी और कुछ मक्का में ही रहे। क्योंकि वे यात्रा करने के लिए रास्ते का खाना और खर्च नहीं रखते थे। उन्हें बहुत कष्ट दिया गया। पवित्र क़ुर्आन में उन का वर्णन है कि वे किस तरह दिन रात फरियाद करते थे।

जब क़ुरैश के काफ़िरों का अत्याचार सीमा से अधिक बढ़ गया और उन्होंने ग़रीब स्त्रियों तथा अनाथ बच्चों को क़त्ल करना आरंभ किया तथा कुछ स्त्रियों को ऐसी निर्ममता से मारा कि उनकी दोनों टांगें दो रस्सियों से बांध कर दो ऊँटों के साथ वे रस्सियाँ खूब जकड़ दीं और फिर उन ऊँटों को दो विपरीत दिशाओं में दौड़ाया। इस प्रकार वे स्त्रियां दो टुकड़े होकर मर गईं।

जब निर्दयी काफ़िरों का अत्याचार इस सीमा तक पहुँच गया। ख़ुदा ने जो अपने बन्दों पर दया करता है अपने रसूल पर अपनी वह्यी उतारी कि पीड़ितों की फरियाद मुझ तक पहुँच गई। आज मैं अनुमति देता हूँ कि तुम भी उनका मुक़ाबला करो और स्मरण रखो कि जो लोग निर्दोष लोगों पर तलवार उठाते हैं वे तलवार से ही मारे जाएँगे। परन्तु तुम कोई अत्याचार न करो कि ख़ुदा अत्याचार करने वालों को मित्र नहीं रखता।

यह है वास्तविकता इस्लाम के जिहाद की, जिसे अन्यायपूर्वक बुरे ढंग से वर्णन किया गया है। निःसंदेह ख़ुदा सहनशील है परन्तु जब किसी क़ौम की चपलता (शरारत) सीमा से गुज़र जाती है तो वह अत्याचारी को

दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ता और स्वयं उनके लिए विनाश के सामान पैदा कर देता है। मैं नहीं जानता कि हमारे विरोधियों ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। ख़ुदा तो पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है -

(अलबक़रह - 257) لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ

अर्थात् इस्लाम धर्म में जब्र नहीं। तो फिर किसने जब्र का आदेश दिया और जब्र के कौन से सामान थे और क्या वे लोग जो जब्र से मुसलमान बनाए जाते हैं उनकी यही श्रद्धा और यही ईमान होता है कि बिना किसी वेतन पाने के बावजूद दो-तीन सौ लोग होने के हज़ारों लोगों का मुक़ाबला करें और जब हज़ार तक पहुँच जाएँ तो कई लाख शत्रुओं को पराजित कर दें तथा धर्म को दुश्मन के आक्रमण से बचाने के लिए भेड़-बकरियों की भांति सर कटा दें और इस्लाम की सच्चाई पर अपने रक्त से मुहरें लगा दें और ख़ुदा की तौहीद को फैलाने के लिए ऐसे आशिक हों कि साधुओं के रूप में कष्ट झेल कर अफ़्रीका के रेगिस्तान तक पहुँचें और उस देश में इस्लाम को फैला दें और फिर हर प्रकार का कष्ट उठाकर चीन तक पहुँचें। न युद्ध के तौर पर बल्कि मात्र साधुओं के रूप में। और उस देश में पहुँचकर इस्लाम का प्रचार करें। जिसका परिणाम यह हुआ कि उनके बरकत वाले उपदेशों से कई करोड़ मुसलमान इस पृथ्वी पर पैदा हो जाएँ और फिर टाट पहने साधुओं के रंग में हिन्दुस्तान में आएँ तथा आर्यवर्त के बहुत से भाग को इस्लाम से दीक्षित कर दें और यूरोप की सीमाओं तक "ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ पहुँचा दें। तुम ईमान से कहो कि क्या यह कार्य उन लोगों का है जो जब्रन मुसलमान किए जाते हैं जिनका दिल काफ़िर और ज़बान मोमिन होती है?

नहीं बल्कि ये उन लोगों के कार्य हैं जिन के दिल ईमान के प्रकाश से भर जाते हैं और जिनके दिलों में ख़ुदा ही ख़ुदा होता है।

हम फिर इस ओर लौटते हैं कि इस्लाम की शिक्षा क्या है। स्पष्ट हो कि इस्लाम का बहुत बड़ा उद्देश्य ख़ुदा की तौहीद और प्रताप पृथ्वी पर स्थापित करना और शिर्क का पूर्णरूप से समूल विनाश करना और समस्त विभिन्न समुदायों को एक कलिमा पर क़ायम करके उनको एक क़ौम बना देना है। और पहले धर्म जिस क़दर संसार में गुज़रे हैं और जिस क़दर नबी और रसूल आएँ हैं उनकी दृष्टि केवल अपनी क़ौम और अपने देश तक सीमित थी और यदि उन्होंने कुछ शिष्टाचार भी सिखाए थे तो उस नैतिक शिक्षा से उन का उद्देश्य इस से अधिक न था कि अपनी ही क़ौम को उन के शिष्टाचार से सौभाग्यशाली करें। अत: हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट तौर पर कह दिया कि मेरी शिक्षा केवल बनी इस्राईल तक सीमित है और जब एक औरत ने जो बनी इस्राईल के खानदान से न थी बड़ी विनम्रतापूर्वक उन से मार्ग दर्शन चाहा तो उन्होंने उसको अस्वीकार किया और फिर वह ग़रीब औरत स्वयं को कुतिया से समानता दे कर दोबारा हिदायत की प्रार्थी हुई तो वही उत्तर उसको मिला कि मैं केवल इस्राईल की भेड़ों के लिए भेजा गया हूँ। अन्तत: वह चुप रह गई। परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहीं नहीं कहा कि मैं केवल अरब के लिए भेजा गया हूँ। अपितु पवित्र क़ुर्आन में यह है -

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا

(अल आराफ़ - 158)

अर्थात् लोगों से कह दे कि मैं समस्त संसार के लिए भेजा गया हूँ। परन्तु याद रहे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का उस औरत को साफ़

उत्तर देना यह ऐसी बात नहीं है कि इसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कोई गुनाह था बल्कि सामान्य हिदायत का अभी समय नहीं आया था और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला की ओर से यही आदेश था कि तुम विशेष रूप से बनी इस्राईल के लिए भेजे गए हो, दूसरों से तुम्हें कुछ मतलब नहीं। अत: जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नैतिक शिक्षा भी केवल यहूदियों तक सीमित थी। बात यह थी कि तौरात में ये आदेश थे कि दांत के बदले दांत और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक। इस शिक्षा का उद्देश्य केवल यह था ताकि यहूदियों में न्याय को स्थापित किया जाए और अनीति एवं अत्याचार से रोका जाए। चूँकि उनके चार सौ वर्ष तक दासता में रहने के कारण उनमें अत्याचार और कमीनेपन की आदतें अधिक पैदा हो गई थीं। अत: ख़ुदा की हिकमत ने यह चाहा कि जैसा कि प्रतिशोध और बदला लेने में उनकी आदतों में एक कठोरता थी, उसका निवारण करने के लिए कठोरता के साथ एक नैतिक शिक्षा प्रस्तुत की जाए। अत: वह नैतिक शिक्षा इंजील है जो केवल यहूदियों के लिए है न कि सम्पूर्ण संसार के लिए, क्योंकि अन्य क़ौमों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कोई मतलब न था।

परन्तु वास्तविक बात यह है कि उस शिक्षा में जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने प्रस्तुत की, केवल यही दोष नहीं कि वह संसार की सामान्य सहानुभूति पर आधारित नहीं अपितु एक यह भी दोष है जैसा कि तौरात अत्याचार और प्रतिशोध की शिक्षा में अधिकता की ओर झुकी है वैसा ही इंजील क्षमा और माफ करने में अधिकता की ओर झुक गई है। इन दोनों किताबों ने मानव रूपी वृक्ष की समस्त शाखों का कुछ ध्यान नहीं रखा। अपितु उस वृक्ष की एक शाख को तैरात प्रस्तुत करती है और

दूसरी शाख इंजील के हाथ में है और दोनों शिक्षाएँ संतुलन से गिरी हुई हैं। क्योंकि जैसा कि हर समय और हर अवसर पर बदला लेना और दण्ड देना बुद्धिमत्ता नहीं ऐसा ही हर समय और हर अवसर पर क्षमा एवं माफ़ करना मानवीय प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से बिल्कुल विपरीत है। इसी कारण पवित्र क़ुर्आन ने इन दोनों शिक्षाओं को रद्द करके यह फ़रमाया है -

جَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثۡلُہَا فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُہٗ عَلَی اللّٰہِ

(अश्शूरा - 41)

अर्थात् बुराई का बदला उतनी ही बुराई है जो की जाए जैसा कि तौरात की शिक्षा है परन्तु जो व्यक्ति क्षमा करे जैसा कि इंजील की शिक्षा है तो इस अवस्था में वह क्षमा अच्छी और वैध होगी जबकि उसका कोई अच्छा परिणाम निकले और जिसे क्षमा किया गया, उसका कोई सुधार इस क्षमा से आपेक्षित हो, अन्यथा कानून यही है जो तौरात में वर्णित है।